International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-1 April - 2014
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

सुभाषचंद्र बोस के राष्ट्रवाद का महत्व : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ बी सी तिवारी

विभागाध्यक्ष इतिहास

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बागेश्व

सार

सुभाष एक महान एवं साहसी थे। उनके सैन्य कारनामों, बेजोड़ देशभक्ति और अनुकरणीय बहादुरी ने उन्हें भारत के युवा पुरुषों और महिलाओं के लिए एक आदर्श बना दिया । वह आज भी हमारे दिल और दिमाग में रहते हैं एवं एक अग्रणी प्रकाश और प्रेरणा के स्रोत के रूप में विद्यमान हैं। उन्होंने ठोस आर्थिक योजना का समर्थन किया और खुद रास्ता दिखाया। यह भी याद रखने की जरूरत है कि उन्होंने ही भारतीय महिलाओं को भारत की स्वतंत्रता के लिए गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया था। कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन की कमान में सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज की एक महिला रेजिमेंट का गठन किया । इसे रानी झांसी रेजिमेंट कहा जाता था। आजाद हिंद फौज भारत के लोगों के लिए एकता और वीरता का प्रतीक बन गई।

मुख्य शब्द सुभाषचंद्र बोस , राष्ट्रवाद , महत्व , ऐतिहासिक

प्रस्तावना

जीवनकाल

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। उनकी माता का नाम प्रभावती दत्त बोस और पिता का नाम जानकीनाथ बोस था। अपनी शुरुआती स्कूली शिक्षा के बाद उन्होंने रेवेनशॉ कॉलेजिएट स्कूल (Ravenshaw Collegiate School) में दाखिला लिया। उसके बाद उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज कोलकाता में प्रवेश लिया परंतु उनकी उग्र राष्ट्रवादी गतिविधियों के कारण उन्हें वहां से निष्कासित कर दिया गया।

ऐतिहासिक योगदान

सुभाष ने खुद को एक अपूर्व शक्ति के साथ सेनापति के रूप में समर्पित कर दिया जिसे देखकर अंग्रेज शक्ति भी नतमस्तक होने लगी। सुभाष को स्वयंसेवक सेना का सेनापति नियुक्त किया गया और उनके द्वारा सैनिक शिक्षण नियमित रूप से प्रारम्भ कर दिया गया। युवक संगठन अपूर्व जोश से कार्य कर रहा था। देश में एक के बाद एक दूसरा असन्तोष पैदा हो रहा था और विदेशी शासन के विरूद्ध

विद्रोह की भावना बलवती होती जा रही थी तभी सरकार की ओर से घोषणा की गयी कि प्रिन्स आफ बेल्स भारत की यात्रा पर आ रहे है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रिन्स आफ वेल्स की भारत यात्रा का पूर्ण बहिष्कार करने का प्रस्ताव पास किया।

सन् 1922 में देशबन्धु चितरंजनदास ने एक महत्वपूर्ण योजना बनाई। उनका विचार था कि परिषद में अपने कार्यकर्ता चुनकर भेजे जायें और इस माध्यम से शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली जाये। उसी वर्ष कांग्रेस का सैंतीसवां अधिवेशन गया में हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता देशबन्धु चितरंजनदास ने किया उन्होंने अपनी योजना सभासदों के समक्ष रखीं, परन्तु गाँधी के अनुयायियों ने इसका विरोध किया और प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया। सुभाष चन्द्र बोस और पंडित मोतीलाल नेहरू चितरंजनदास के साथ थे, विरोध बढ़ गया और कांग्रेस मे आपसी मतभेद पैदा हो गये। चितरंजनदास और मोतीलाल नेहरू ने स्वराज पार्टी की स्थापना की घोषणा कर दी। देशबन्धु दास ने औपचारिक रूप से कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। वे गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस की आलोचना करने के लिए भी स्वतंत्र थे। स्वराज पार्टी का आन्दोलन तेज हो गया। सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व मे दिन पर दिन आन्दोलन की गति तीव्र होती जा रही थी, सभी क्षेत्रो में परिषद प्रवेश की चर्चा होने लगी।

इसी समय स्वराज्य पार्टी ने फारवर्ड नामक दैनिक पत्र प्रकाशित करना शुरू किया। इसके मुख्य कर्ताधर्ता, सम्पादक व्यवस्थापक सुभाष चन्द्र बोस ही थे। इस पत्र मे सुभाष चन्द्र बोस ने अपनी उत्साह भरी टिप्पणियों और अभिलेखो से सोई हुई जनता का आव्हान किया और इस प्रकार आन्दोलन में नवप्राणों का संचार कर दिया।

मार्च 1924 में कलकत्ता कारपोरेशन का चुनाव हुआ। स्वराज पार्टी की योजना बनी कि उसे चुनाव लड़कर महानगर पालिका में भी प्रवेश करना है। कांग्रेस ने इसका प्रबल विरोध किया। मनोवल और जनता का सहयोग चितरंजनदास और सुभाष के साथ था। इससे उत्साहित होकर उसने अपने उम्मीदवार खड़े कर दिये। स्वराज्य पार्टी की महान विजय हुई। नगर पालिका के 76 स्थानों मे 55 स्थान पर स्वराज्य पार्टी के प्रत्याशी विजयी घोषित किये गये। देशबन्धु दास नगर पालिका के मेयर बने।

सुभाष चन्द्र बोस को नगर पालिका का कार्यकारी अधिकारी बनाया गया। उस समय सुभाष की अवस्था मात्र 27 वर्ष की थी।

सुभाषचन्द्र बोस और चितरंजनदास ने नगर महापालिका की कार्यप्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। इस समय सुभाष को अपने एक महान नेता का निर्देशन मिल रहा था और वे चितरंजनदास के नेतृत्व में अपने विचारों को क्रियान्वित करने में लगे हुये थे। उनके नेतृत्व में कलकत्ता महानगर में पहली बार यह अनुभव किया गया कि कम से कम स्थानीय शासन के क्षेत्र में एक स्वराज्य संस्था बनी है। नगर की जनता को पहली बार ऐसा अनुभव हुआ कि नगरपालिका के कर्मचारी जनता के सेवक हैं।

नगर पालिका में सभी व्यक्तियों के लिए खादी के वस्त्र धारण करना अनिवार्य कर दिया गया था। महापालिका में पहली बार राष्ट्रीय नेता आमंत्रित किये गये थे। अब ब्रिटिश शासन के अधिकारियों का स्वागत बिल्कुल बन्द कर दिया गया। अब राष्ट्रीय नेताओं को नगर पालिका में बुलाया जाता था और

उनका अभिनन्दन किया जाता था। स्वराज्य पार्टी की इस विजय ने सुभाष चन्द्र बोस के मनमस्तिष्क पर बसी मातृभूमि की सेवा व विश्वास की जड़ों को और मजबूत कर दिया।

सुभाष चन्द्र बोस ने स्वयं अपने वेतन में 50 प्रतिशत कटौती कर दी थी। उन्हें 3,000 रुपये मासिक वेतन मिलना चाहिये था, उसके स्थान पर उन्होनें मात्र 1500 रुपये लेना स्वीकार किया। सुभाष चन्द्र बोस ने अब सुधार और जन सेवा के कार्य ने अपना सम्पूर्ण समय और ध्यान केन्द्रित करना शुरू किया।

भारतीय राजनीति में प्रवेश

सुभाष चन्द्र बोस ने स्वयं अपनी आत्मकथा में स्वीकार किया है दिसम्बर 1911 तक में राजनीतिक दृष्टि से इतना अविकसित था कि सम्राट जार्ज पंचम के राज्यारोहण के बारे में एक निबंध प्रतियोगिता में शामिल हुआ। दिसम्बर में सम्राट जार्ज पंचम कलकत्ता आये तो सुभाष चन्द्र ने बड़े उत्साह से उनकी सवारी देखी थी। पहली प्रेरणा उन्हें 1912 में एक विद्यार्थी से मिली जिसका नाम उन्होने अपनी आत्मकथा में एच0के0एस0 लिखा है। इस विद्यार्थी से सुभाषचन्द्र का परिचय उनके प्रधानाध्यापक वेनीमाधव ने कराया था वह कटक आने से पूर्व कलकत्ता की एक टोली से सम्बद्ध था, जिसका लक्ष्य अध्यात्मिक उत्थान और रचनात्मक ढंग से राष्ट्रीय सेवा करना था। इस मित्र ने सुभाष चन्द्र का ध्यान देश के प्रति एवं कर्तव्य के प्रति आकर्षित किया और देशभक्त टोली से उनका परिचय कराया। इस समय तक सुभाषचन्द्र बोस अपनी आध्यात्मिक अभिरूचि नही छोड़ सके थे। उनके स्कूली अध्यापकों में केवल एक ही ऐसे थे, जिनकी राजनीति में रूचि थी।

अतः जब वे कलकत्ता अध्ययन हेतु आये तो उन्होंने उनसे राजनीतिक रुचि जाग्रत करने की आशा व्यक्त की। उन पर अपने महाविद्यालय जीवन का ही सबसे अधिक प्रभाव रहा। उनकी इच्छा काफी समय तक समाज सेवा द्वारा राष्ट्र–निर्माण की थी। राजनीतिक दृष्टि से सुभाष की टोली किसी भी तरह से आतंकवादी कार्यो या गुप्त षडयन्त्र के विरुद्ध थी, इसलिए यह टोली बंगाल के विद्यार्थियों मे बहुत लोकप्रिय नही थी। क्योंकि उन दिनों आतंकवादी क्रान्तिकारियों से आंदोलन के प्रति बंगाल के छात्रों में बड़ा आकर्षण था। उन पर इस काल में अरविन्द घोष के विचारों और जीवन का भी प्रभाव पड़ा था, क्योंकि अरविन्द घोष उस समय बंगाल में सबसे अधिक लोकप्रिय नेता थे।

अंग्रेजों की गुलामी की वजह से छोड़ दी भारतीय सिविल सेवा की नौकरी

कॉलेज से निष्कासित होने के बाद इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिये कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय चले गए। वर्ष 1919 में बोस भारतीय सिविल सेवा (Indian Civil Services- ICS) परीक्षा की तैयारी करने के लिए लंदन चले गए और वहाँ उनका चयन भी हो गया। हालांकि बोस ने सिविल सेवा से त्यागपत्र दे दिया क्योंकि उनका मानना था कि वह अंग्रेजों के साथ कार्य नहीं कर सकते।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सुभाष चन्द्र बोस के योगदान का अध्ययन

2. वन्देमातरम् की उपयोगिता एवं सुभाष चन्द्र बोस का भारतीय राजनीति में प्रवेश पर अध्ययन

विवेकानंद की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित

सुभाष चंद्र बोस, विवेकानंद की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे, जबकि चित्तरंजन दास उनके राजनीतिक गुरु थे। वर्ष 1921 में बोस ने चित्तरंजन दास की स्वराज पार्टी द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र (फॉरवर्ड)के संपादन का कार्यभार संभाला।

वर्ष 1923 में बोस को अखिल भारतीय युवा कांग्रेस का अध्यक्ष और साथ ही बंगाल राज्य कांग्रेस का सचिव चुना गया। वर्ष 1925 में क्रांतिकारी आंदोलनों से संबंधित होने के कारण उन्हें माण्डले (Mandalay) कारागार में भेज दिया गया जहाँ वह तपेदिक की बीमारी से ग्रसित हो गए।

अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलंद की

वर्ष 1930 के दशक के मध्य में बोस ने यूरोप की यात्रा की। उन्होंने पहले शोध किया तत्पश्चात् 'द इंडियन स्ट्रगल' नामक पुस्तक का पहला भाग लिखा, जिसमें उन्होंने वर्ष 1920–1934 के दौरान होने वाले देश के सभी स्वतंत्रता आंदोलनों को कवर किया। बोस ने वर्ष 1938 (हरिपुरा) में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया।

अंग्रेजों के क्रूर और बुरे बर्ताव के कारण अपने देशवासियों की दयनीय स्थिति से वो बहुत दुखी थे। भारत की आजादी के माध्यम से भारत के लोगों की मदद के लिये सिविल सेवा के बजाय उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने का फैसला किया। देशभक्त देशबंधु चितरंजन दास से नेताजी बहुत प्रभावित थे और बाद में बोस कलकत्ता के मेयर के रुप में और उसके बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। बाद में गांधी जी से वैचारिक मतभेदों के कारण उन्होंने पार्टी छोड़ दी। कांग्रेस पार्टी छोड़ने के बाद इन्होंने अपनी फारवर्ड ब्लॉक पार्टी की स्थापना की।

वो मानते थे कि अंग्रेजों से आजादी पाने के लिये अहिंसा आंदोलन काफी नहीं है इसलिये देश की आजादी के लिये हिंसक आंदोलन को चुना। नेताजी भारत से दूर जर्मनी और उसके बाद जापान गये जहाँ उन्होंने अपनी भारतीय राष्ट्रीय सेना बनायी, 'आजाद हिन्द फौज'। ब्रिटिश शासन से बहादुरी से लड़ने के लिये अपनी आजाद हिन्द फौज में जर्मनी और जापान के भारतीय वासियों और भारतीय युद्ध बंदियों को शामिल किया। सुभाष चन्द्र बोस ने अंग्रेजी शासन से अपनी मातृभूमि को मुक्त बनाने के लिये "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" के अपने महान शब्दों के द्वारा अपने सैनिकों को प्रेरित किया।

INA का गठन

INA का गठन पहली बार मोहन सिंह (Mohan Singh) और जापानी मेजर इविची फुजिवारा (Iwaichi Fujiwara) के नेतृत्त्व में किया गया था तथा इसमें मलायन (वर्तमान मलेशिया) अभियान में सिंगापुर में जापान द्वारा कब्जा किये गए ब्रिटिश–भारतीय सेना के युद्ध के भारतीय कैदियों को शामिल किया गया था।

सुभाष चंद्र बोस को असाधारण नेतृत्व कौशल और एक करिश्माई वक्ता के साथ सबसे प्रभावशाली स्वतंत्रता सेनानी माना जाता है।

उन्हें नेताजी कहा जाता था। उन्होंने 1943 में पहली भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA), आज़ाद हिंद फौज का गठन किया और एक सशस्त्र तख्तापलट शुरू किया और हजारों भारतीय युवाओं को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

उनके प्रसिद्ध नारे हैं 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा', 'जय हिंद' और 'दिल्ली चलो'। वह अपने उग्रवादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं जिसका उपयोग उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने और अपनी समाजवादी नीतियों के लिए किया था। नेताजी को कई लोग अब तक के सबसे महान नेताओं में से एक मानते हैं। मुखर राष्ट्रवाद के प्रतीक बने रहेंगे सुभाष चंद्र बोस।

वन्देमातरम् की उपयोगिता

वंकिमचन्द्र के आनन्द मठ में अपने जीवनकाल में ही अपार ख्याति प्राप्त कर ली थी और उनके प्रसिद्ध उपन्यास आनन्द मठ ने तो उन्हें यश के शिखर तक पहुँचा दिया था। वंकिमचन्द्र बंग्ला साहित्य के महान साहित्यकार, उपन्यासकार एवं विचारक थे और वह समूचे देश में प्रकाश स्तम्भ की तरह अपने लेखन की ज्योति विखेर कर समाज को प्रेरक दिशा दे रहे थे। आनन्द मठ उनके साहित्य में उस शिखर पर आज भी खड़ा है जिसे विरले ही छू पाते हैं। यह वह उपन्यास है जिसका गीत राष्ट्रगीत बन गया और आजादी के संघर्ष में जिसने आन्दोलनकारियों को अद्भुत उत्साह से भर दिया। सुभाष चन्द्र बोस के व्यक्तित्व पर राष्ट्रगीत वन्देमातरम का विशेष प्रभाव पड़ा। इसी गीत का क्रान्तिकारी लडाकों के मस्तिष्क पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ा और जिसने सुभाष के साथ–साथ उनके अन्य साथियों को चेताया कि आजादी उनका सर्वप्रथम अधिकार है।

जापान और जर्मनी से मदद लेना अंग्रेजों को खटका

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से मदद लेने की कोशिश की थी तो ब्रिटिश सरकार को यह बात खटकने लगी और गुप्तचरों को 1941 में उन्हें खत्म करने का आदेश दिया।

नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने (सुप्रीम कमाण्डर) के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए दिल्ली चलो! का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया।

एक समाज सुधारक के रूप में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की भूमिका

निर्वासन में भारत के प्रधान मंत्री और आईएनए के सर्वोच्च कमांडर के रूप में पदभार संभालने के साथ ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सामाजिक सुधारों के प्रयासों ने पूरी तरह से विदेशी धरती पर उड़ान भरी। सामाजिक न्याय और सामाजिक समानता में अपने आधार के साथ अपने धर्मनिरपेक्ष और समतावादी दृष्टिकोण के लिए सही, निर्वासन में राज्य के प्रमुख के रूप में नेताजी के नीतिगत निर्णयों

और कार्यों ने वास्तव में सामाजिक सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की जो समाजशास्त्र के छात्रों के लिए बहुत अधिक उपयोगी और रुचि कर है। . सभी वर्गों के भारतीयों के साथ नेताजी की निरंतर बातचीत और छोटी उम्र से ही उनकी व्यापक यात्रा और राजनीतिक गतिविधियों ने उन्हें भारतीय समाज में व्यापक विभाजन से अवगत कराया था। उनका सरोकार जातिगत असमानता और उससे जुड़े नुकसानों से था, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में असमानता और भारत में विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सांप्रदायिक फूट और प्रतिद्वंद्विता थी। अपनी एक यात्रा के दौरान (सक्रिय राजनीति में आने से पहले) वह भारतीय जाति व्यवस्था के अंत में थे। ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने भारत में जाति और सांप्रदायिक मतभेदों और फूट का इस्तेमाल फूट डालो और राज करो की अपनी नीति को पोषित करने के लिए किया था और इसे औपनिवेशिक ब्रिटिश भारतीय सशस्त्र बलों में भी संस्थागत रूप दिया था।

19 अक्टूबर 1929 को राष्ट्रपति का भाषण देते समय लाहौर में आयोजित पंजाब छात्र सम्मेलन को संबोधित करते हुए नेताजी ने कहा था। स्वतंत्रता से मेरा तात्पर्य सर्वांगीण स्वतंत्रता से है.. उसकी स्वतंत्रता का तात्पर्य न केवल राजनीतिक बंधनों से मुक्ति है, बल्कि धन का समान वितरण, जातिगत बाधाओं और सामाजिक असमानताओं का उन्मूलन, और सांप्रदायिकता और धार्मिक असहिष्णुता का विनाश है . जब तक सामाजिक दमन और आर्थिक असमानता इन लोगों पर भारी पड़ी, राजनीतिक स्वतंत्रता का विचार उन्हें प्रेरित नहीं कर सका। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में अपने पहले कार्यकाल के दौरान, उन्होंने एक गरीब भारत को आर्थिक और औद्योगिक रूप से उन्नत में बदलने के निश्चित उद्देश्य के साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ आईएनसी के तत्वावधान में एक राष्ट्रीय योजना समिति स्थापित करने का निर्णय लिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सुभाष चन्द्र बोस योगदान

सुभाष चंद्र बोस भारत के सबसे महान स्वतंत्रता सेनानी में से एक थे। जहां तक अंग्रेजों के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का संबंध है, सुभाष चंद्र बोस हमेशा एक प्रमुख व्यक्ति बने रहेंगे। बोस ने शुरू से ही भारत की स्वतंत्रता की दिशा में अपना रास्ता खुद तय करने का फैसला किया, यह जानने के बावजूद कि यह कितना कठिन होने वाला था।

उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय सेना को पुनर्जीवित किया, जिसे 1943 में आजाद हिंद फौज के नाम से जाना जाता था, जिसे शुरू में 1942 में रास बिहारी बोस द्वारा गठित किया गया था। आईएनए द्वारा किया गया हमला, चाहे वह कितना भी अल्पकालिक क्यों न हो, एक महत्वपूर्ण कारक था जिसने अंततः उनके संचालन को रोकने और अपनी भूमि पर वापस जाने के ब्रिटिश निर्णय में योगदान दिया। इसने, अंत में, भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

सुभाष चंद्र बोस ने सेना से कहा, "हमारे सामने एक गंभीर लड़ाई है क्योंकि दुश्मन शक्तिशाली, बेईमान और क्रूर है। आजादी की इस अंतिम यात्रा में, आपको भूख, अभाव, जबरन मार्च और मौत का सामना करना पड़ेगा। जब आप इस परीक्षा को पास कर लेंगे तभी आपको आजादी मिलेगी"। आईएनए ने

भारतीय क्षेत्र में स्वतंत्रता लाने के लिए कई लड़ाईयां और संघर्ष किए। ये सब सुभाष चंद्र बोस की उच्च बुद्धि के कारण ही संभव हो सका।

उन्होंने ठोस आर्थिक योजना का समर्थन किया और खुद रास्ता दिखाया। यह भी याद रखने की जरूरत है कि उन्होंने ही भारतीय महिलाओं को भारत की स्वतंत्रता के लिए गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया था। आजाद हिंद फौज की एक महिला रेजिमेंट का गठन किया गया, जो कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन की कमान में थी। इसे रानी झांसी रेजिमेंट कहा जाता था। आजाद हिंद फौज भारत के लोगों के लिए एकता और वीरता का प्रतीक बन गई।

सुभाष एक महान साहसी भी थे। उनके सैन्य कारनामों, बेजोड़ देशभक्ति और अनुकरणीय बहादुरी ने उन्हें भारत के युवा पुरुषों और महिलाओं के लिए एक आदर्श बना दिया है। वह अभी भी हमारे दिलों और दिमागों में रहते हैं और एक अग्रणी प्रकाश और प्रेरणा के स्रोत के रूप में काम करते हैं।

उन्होंने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं की तरह अपने अद्वितीय तरीके से देश को 200 साल के ब्रिटिश शासन के चंगुल से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1920–1941 के दौरान कई बार जेल भेजा गया । एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपने जीवन के अंतिम दिन तक, उन्होंने अंग्रेजों से लड़ने की भावना को बनाए रखा – अपनी मृत्यु के समय भी वे रूस में प्रवास करने और अंग्रेजों से लड़ने का एक नया तरीका खोजने की योजना बना रहे थे। इन्होंने अपने जीवन में देशभक्ति को अधिक महत्व दिया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को याद करने के लिए हर साल 23 जनवरी को सुभाष चंद्र बोस का जन्मदिन देश के विभिन्न हिस्सों में मनाया जाता है।

स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई

21 अक्टूबर 1943 में सुभाष चंद्र बोस आजाद हिंद फौज के सर्वोच्च सेनापति थे और इस अधिकार से वे स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड सहित 11 देशो की सरकारों ने मान्यता दी थी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। सुभाष उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया।

1944 को आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा आक्रमण किया और कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त भी करा लिया। कोहिमा का युद्ध 4 अप्रैल 1944 से 22 जून 1944 तक लड़ा गया एक भयंकर युद्ध था। इस युद्ध में जापानी सेना को पीछे हटना पड़ा था और यही एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

आजाद हिंद रेडियो पर महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहा

आज़ाद हिंद रेडियो का आरंभ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्त्व में 1942 में जर्मनी में किया गया था। इस रेडियो का उद्देश्य भारतीयों को अंग्रेज़ों से स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु संघर्ष करने के लिये

प्रचार–प्रसार करना था। इस रेडियो पर बोस ने 6 जुलाई, 1944 को महात्मा गांधी को (राष्ट्रपिता) के रूप में संबोधित किया।

उपसंहार

सुभाष एक महान साहसी भी थे। उनके सैन्य कारनामों, बेजोड़ देशभक्ति और अनुकरणीय बहादुरी ने उन्हें भारत के युवा पुरुषों और महिलाओं के लिए एक आदर्श बना दिया है। वह अभी भी हमारे दिलों और दिमागों में रहते हैं और एक अग्रणी प्रकाश और प्रेरणा के स्रोत के रूप में काम करते हैं। उन्होंने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे दिन के अन्य प्रमुख प्रकाशमानों की तरह अपने अद्वितीय तरीके से देश को 200 साल के ब्रिटिश शासन के चंगुल से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें ग्यारह बजे जेल भेजा गया था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय सेना को पुनर्जीवित किया, जिसे 1943 में आजाद हिंद फौज के नाम से जाना जाता था, जिसे शुरू में 1942 में रास बिहारी बोस द्वारा गठित किया गया था। आईएनए द्वारा किया गया हमला, चाहे वह कितना भी अल्पकालिक क्यों न हो, एक महत्वपूर्ण कारक था जिसने अंततः उनके संचालन को रोकने और अपनी भूमि पर वापस जाने के ब्रिटिश निर्णय में योगदान दिया। इसने, अंत में, भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

सन्दर्भ ग्रथ सूचि

[1] अली, एस. (2012)। कप्तान लक्ष्मीरू संस्मरण और श्रद्धांजलि। बैंगलोर, कर्नाटकरू डीवाईएफआई कर्नाटक राज्य समिति और चिंतन पुस्तक।

[2] आर्या, एम. (2007)। देशभक्त, अद्वितीय भारतीय नेता नेताजी सुभाष चंद्र बोसरू एक नई व्यक्तिगत जीवनी। नई दिल्लीरू लोटस प्रेस।

[3] बोस, एस. (2014)। महामहिम के विरोधी। गुड़गांवरू पेंगुइन बुक्स।

[4] बोस, एस.सी. (1992)। सुभाष चंद्र बोस के चुनिंदा भाषण। नई दिल्लीरू प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सरकार। भारत की।

[5] हर्टोग, आर. (2001)। द साइन ऑफ़ द टाइगररू सुभाष चंद्र बोस और जर्मनी में उनकी भारतीय सेना, 1941–45। नई दिल्लीरू रूपा एंड कंपनी.

[6] मुखर्जी, आर. (2014)। नेहरू और बोसरू समानांतर जीवन। वाइकिंग–पेंगुइन बुक्स इंडिया।

[7] टोए, एच. (1962)। सुभाष चंद्र बोस (वसंत बाघ); एक क्रांति का अध्ययन। बॉम्बेरू जैको पब। मकान।

[8] बोस, सुभाष चंद्र, एक भारतीय तीर्थयात्रीरू एक अधूरी आत्मकथा, संस्करण। बोस सिसिर के. और बोस द्वारा, सुगाता, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997

[9] बोस, सुभाष चंद्र, भारतीय संघर्ष (1920–1942), जयश्री पत्रिका ट्रस्ट, 2013

[10] खान, शाह नवाज, माई मेमोरीज ऑफ आई.एन.ए. और इसके नेताजी, राजकमल प्रकाशन, 1946

[11] बोस सिसिर के. और बोस, सुगाता, संपा., नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आवश्यक लेखन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999

[12] गॉर्डन, ए. लियोनार्ड, ब्रदर्स अगेंस्ट द राजरू ए बायोग्राफी ऑफ़ इंडियन नेशनलिस्ट्स शरत एंड सुभाष चंद्र बोस, रूपा एंड कंपनी, 2015